ISSN: 2456–4397 RNI No.UPBIL/2016/68067 Vol-5* Issue-9* December-2020
Anthology : The Research

अहिंसा : स्वरूप विवेचन

Ahimsa: Swaroop Vivechan

Paper Submission: 15/12/2020, Date of Acceptance: 26/12/2020, Date of Publication: 27/12/2020

दिनेश कुमार मिश्र
सह आचार्य,
जैनोलॉजी विभाग,
राजकीय बांगड़ स्नातकोत्तर महाविद्यालय, पाली,
राजस्थान, भारत

सारांश

धर्म-दर्शन में व्रत का अप्रतिम महत्त्व है। अहिंसा एक व्रत है इसकी प्रसिद्धि जैन धर्म में पंचमहाव्रत के अन्तर्गत प्रथम स्थान पर है। बौद्ध-दर्शन के पंचशील में इसको स्थान दिया गया है। योग-दर्शन में 'यम' के अन्तर्गत इसका स्थान सर्वोपरि है। प्रायः सभी धर्म-दर्शनों में धर्म के मूल में अहिंसा को रखा गया है।

In Dharm Darshan, Fast is of great importance. Ahimsa is a fast, it's fame is ranked first under Jain ' Panchmahavrat '. It is also ranked in the Panchsheel of Buddhist Philosohpy . In Yoga darshan, it's place under 'Yama' is paramount. Non- Violence has been placed at the core of religion in almost all religious observances.

मुख्य शब्द : अहिंसा, आचार, जैनागम, आगम, गुण अहिंसा ।
Ahimsa, Ethics, Jainagam, Agam, Gun Ahimsa.

प्रस्तावना

'महाभारत' में अहिंसा को सकलधर्म कहा गया है।[1] वहीं अनुशासन पर्व में इसकी श्रेष्ठता की उद्घोषणाएँ की गई हैं।[2] संसार का आद्य ग्रन्थ 'ऋग्वेद' जिसकी प्राचीनता सभी भारतीय एवं पाश्चात्य विद्वान् स्वीकार करते हैं, उसमें भी मनुष्य का प्रथम एवं श्रेष्ठ कर्तव्य है – एक दूसरे की रक्षा करना। अहिंसा की सर्वांगीण व्याख्या इस ग्रन्थ के सूत्र में प्रस्तुत है :–

संगच्छध्वं संवदध्वं सं वो मनांसि जानताम् ।देवाभागं यथापूर्वे संजानाना उपासते।।

'यजुर्वेद' में सम्पूर्ण त्रस–स्थावर जाति की शांति की कामना की गयी है।[3] उपनिषद् साहित्य में यत्र–तत्र अहिंसा की प्रतिष्ठा है।[4] 'मनुस्मृति' में अहिंसा को श्रेष्ठ सामायिक धर्म कहा गया है।[5] पुराण साहित्य में भी अहिंसा का विस्तृत विवेचन उपलब्ध है। 'भागवत' में ब्रह्म प्राप्ति के अट्ठारह साधनों में अहिंसा को भी स्थान दिया गया है।[6] योग दर्शन के अष्टांग योग में यम के अंतर्गत अहिंसा का पहला स्थान है।[7] बौद्ध दर्शन में शील के अंतर्गत प्रमुख स्थान अहिंसा का है।[8] जैन दर्शन का मूलाधार ही अहिंसा है। 'आचारांग' में कहा गया है, "आर्यों द्वारा प्रतिपादित यह अहिंसा का मार्ग सर्वश्रेष्ठ है।"[9] 'प्रश्नव्याकरणसूत्र' में अनेक उपमानों द्वारा इसकी महत्ता का वर्णन किया गया है।[10] 'आचार्य समन्तभद्र' ने अहिंसा को 'परमब्रह्म' कहा है।[11] गांधी के शब्दों में "अहिंसा एक स्वयम्भू शक्ति है।"

अहिंसा का अर्थ व स्वरूप

'प्रश्नव्याकरणसूत्र' में अहिंसा को प्रथम संवर कहा गया है। इसके प्रथम संवर कहने के पीछे शास्त्रकार ने तीन तर्क दिये हैं। प्रथमतः त्रस एवं स्थावर समस्त प्राणियों का क्षेम–कुशल करने वाली होने से अहिंसा प्रथम स्थान पर प्रतिष्ठित है। द्वितीय कारण यह है कि समस्त प्राणी हिंसाजनक घटनाओं से पूर्णतया अत्यधिक प्रभावित होते हैं। असत्य, चोरी, परिग्रह या अब्रह्म का सीधा प्रभाव प्राणियों पर नहीं पड़ता इसलिए हिंसा से संतप्त प्राणी अहिंसा को वरदान समझकर इसका स्वागत करने के लिए हमेशा तत्पर रहते हैं। अतः अहिंसा की व्यापकता अपने आप विस्तृत हो जाती है, इसलिए भी संवरों में इसका स्थान सर्वप्रथम है। तीसरा तथ्य है कि संसार में किसी भी तरह का पाप चाहे झूठ हो या चोरी अथवा शोषण सब में भाव हिंसा होती है, इसलिए भाव अहिंसा को धारण कर लेने से सत्य, अस्तेय, ब्रह्मचर्य व अपरिग्रहादि सभी संवरों का भी ग्रहण हो जाता है।[12] इसकी पुष्टि दशवैकालिक चूर्णि में भी की गयी है। उसके अनुसार अहिंसा की विशद् व्याप्ति में अन्य चारों महाव्रतों का समावेश हो जाता है। जहाँ अहिंसा है, वहाँ पाँचों महाव्रत हैं।[13] 'हारिभद्रीयाष्टक' में भी सत्यादि चारों व्रतों के पालन का प्रयोजन अहिंसा की सुरक्षा करना बताया गया है।[14] यदि

अहिंसा धान्य है तो सत्य आदि उसकी रक्षा रूपी बाड़ हैं।[15] अहिंसा यदि पानी है तो सत्य आदि उसकी रक्षा करने वाले पाल हैं।[16]

अहिंसा का शब्दशः अर्थ है – हिंसा नहीं करना। इसकी व्युत्पत्ति नञ् पूर्वक 'हिंसि (हिंस्) हिंसायाम्'[17] धातु से अङ् (अ) स्त्रीलिंग में टाप् करने पर निष्पन्न होती है। कायिक, वाचिक एवं मानसिक हिंसा का सर्वथा अभाव अहिंसा है।[18] आप्टे के अनुसार अनिष्टकारिकता का अभाव अर्थात् किसी प्राणी को न मारना, मन, वचन व कर्म से किसी को पीड़ा न पहुँचाना आदि अहिंसा है।[19]

अहिंसा के साथ जुड़ा 'अ' शब्द सामान्यतया निषेधात्मकता की प्रतीति कराता है। यही कारण है कि जनसामान्य अहिंसा का अर्थ निवृत्तिपरक मान लेते हैं। जबकि अहिंसा का स्वरूप विधेयात्मक भी है अर्थात् अहिंसा के दो स्वरूप हैं – निषेधात्मक और विधेयात्मक। निषेधात्मक अहिंसा का अर्थ है किसी भी प्राणी का प्राणघात नहीं होना। आचारांग[20], सूत्रकृतांग, प्रश्नव्याकरणसूत्र, आवश्यकसूत्र आदि में षट्कायों को तीन करण और तीन योग से घात नहीं करने की बात कही गयी है, वह अहिंसा का निषेधात्मक पहलू है। प्रश्नव्याकरण में अहिंसा को 'अप्पमातो' कहा गया है। जिसका अर्थ है, प्रमाद का त्याग। कषायों का त्याग अथवा प्रमादों का परित्याग अप्रमाद है, इससे अहिंसा होता है। अहिंसा अभय रूप है। अहिंसा के शरणभूत होने पर समस्त प्राणी अभय हो जाते हैं। 'सव्वस्स वि अमाधाओ' यह सभी प्राणियों के घात का परित्याग रूप है अर्थात् प्राणियों के घात न करना 'अमाघात' है। यह अहिंसा का निषेधात्मक स्वरूप हैं। अहिंसा के विधेयात्मक स्वरूप के अंतर्गत अहिंसा के सदृश जीव रक्षा, दया, करुणा, सेवा आदि भाव भी हैं। 'प्रश्नव्याकरणसूत्र' में इससे सम्बन्धित अनेक अभिधानों का प्रयोग हुआ है, यथा– "दया, सम्मत्ताराहक, बोही, नन्दा, भद्दा, विसिट्ठदिट्ठी, समिई, रक्खा, शिव, जयणं, अस्साओ, वीसाओ, खंति, कल्लाणं, पमोअ, विभूइ, सील, संती आदि।"

मन, वचन और काया से किसी भी परिस्थिति में सूक्ष्म या बादर, त्रस एवं स्थावर किसी भी जीव का जीवन भर प्राणघात नहीं करना, दूसरों से नहीं करवाना और करने वाले का समर्थन नहीं करना अहिंसा महाव्रत है।[21] ''आवश्यकसूत्र' में जीव की तीन योग व तीन करण से हिंसा नहीं करने को अहिंसा कहा गया है।[22] 'नियमसार' में कुल, योनि, मार्ग, स्थान आदि की जानकारी करके उसके आरम्भ से बचने को अहिंसा बताया गया है।[23] 'मूलाचार' के अनुसार "पृथ्वी, जल, वायु, अग्नि, वनस्पति तथा त्रस ये षड्कायिक जीव, इन्द्रिय, गुणस्थान, मार्गणा, कुल, आयु व योनि इनमें सब जीवों को जानकर उठने–बैठने कायोत्सर्ग आदि सभी क्रियाओं में हिंसा आदि का त्याग करना अहिंसा महाव्रत है।"[24]

अहिंसा के भेद

अहिंसा के दो मुख्य भेद किये गये हैं – द्रव्य अहिंसा और भाव अहिंसा। किसी भी प्राणी के दस प्राणों में प्रमाद या कषाय वश किसी भी प्राण का घात न करना और रक्षा, सेवा, दया या करुणा करना द्रव्य अहिंसा है। इसी प्रकार आत्मा के परिणामों तथा गुणों का घात न करना, बल्कि शुद्ध परिणामों तथा गुणों में वृद्धि करना भाव अहिंसा है। इन दोनों के दो–दो भेद हैं – स्वद्रव्य अहिंसा व परद्रव्य अहिंसा, स्वभाव अहिंसा व परभाव अहिंसा। क्रोधादि के वशीभूत होकर अपने शरीर इन्द्रिय आदि को घात से बचाना स्वद्रव्य अहिंसा है। क्रोधादिवश दूसरे के प्राणों का नाश न करना परद्रव्य अहिंसा है। इसी प्रकार अपने स्वभाव से परिणामों को रागादि से मलिन न करना तथा निजगुणों में रमन करना स्वभाव अहिंसा है तथा दूसरे प्राणियों के आत्मस्वभावों में हानि न पहुँचाना तथा शुभ परिणामों में वृद्धि करना परभाव अहिंसा है।

अहिंसा के विविध नाम

'प्रश्नव्याकरणसूत्र' में अहिंसा के साठ नाम मिलते हैं।[25] शास्त्रकार का कहना है, ये सभी नाम उसके गुणनिष्पन्न हैं और ऐसे ही अन्य नाम भी हो सकते हैं। हालांकि इस ग्रन्थ के मूल में मात्र नामों का उल्लेख ही किया गया है, किन्तु व्याख्याकारों ने इसकी सार्थकता पर भी प्रकाश डाला है,[26] जिसका संक्षिप्त रूप निम्न प्रकार हैः–

1. निव्वाण – निर्वाण–मोक्ष : अहिंसा को निर्वाण की संज्ञा दी गयी है, क्योंकि यह 'निर्वाण' यानि मोक्ष का कारणभूत है।
2. निव्वुई – निर्वृत्ति–स्वास्थ्य : आत्मा की स्वस्थता निर्वृत्ति कहलाती है। विषय आदि रोगों से अस्वस्थ–अशान्त आत्मा की स्वस्थता व शांति अहिंसा ही प्रदान करती है, इसलिए इसकी 'निर्वृत्ति' नाम की सार्थकता है।
3. समाही – समाधि–समता : समताभाव ही समाधि है। अहिंसा समता का कारण है और कारण में कार्य निहित होता है, इसलिए यह 'समाधि' है।
4. सत्ती – शक्ति : अहिंसा आत्मिक शक्ति का कारण है। अहिंसा के पालन से मनुष्य में निर्भयता, वीरता, क्षमा, दया, आदि आत्मिक शक्तियों की अभिवृद्धि होती है। इससे हिंसक जीव भी अपना वैर छोड़कर परस्पर प्रेम करने लग जाते हैं, इसलिए अहिंसा को आत्मशक्ति रूप होने से 'शक्ति' कहा गया है।
5. कित्ती – कीर्ति–यश : अहिंसा पालन से यश की प्राप्ति होती है। कारण में कार्य का उपचार होने से 'कीर्ति' नाम की सार्थकता है।
6. कंती – कान्ति– प्रसन्नता : अहिंसा से चेहरे पर प्रसन्नता झलकती है, शरीर का तेज बढ़ता है, सौंदर्य एवं शोभा में अभिवृद्धि होती है, इसलिए यह 'कान्ति' है।
7. रइय – रई–रति : प्राणीमात्र के प्रति प्रीति उत्पन्न करने के कारण अहिंसा को 'रति' कहा गया है।
8. विरई – विरतिः–विराग : अहिंसा सावद्यकर्मों से विराग उत्पन्न करती है, इसलिए यह 'विरति' है।
9. सुयंग – श्रुतांग–श्रुतज्ञान : अहिंसा की उत्पत्ति श्रुतज्ञान–आगम ज्ञान से होती है। श्रुतज्ञान इसका आधार होने से यह 'श्रुतांग' है।
10. तित्ती – तृप्ति–संतोष : अहिंसा से आत्म–संतोष होता है। संतोष का कारण होने से इसे 'तृप्ति' कहा गया।

11. दया – प्राणि रक्षा : अहिंसा प्राणियों के प्राण की रक्षा करती है। इसके मूल में दया भाव होता है, इसलिए यह 'दया' रूप है।
12. विमुत्ती – विमुक्ति–मुक्ति : अहिंसा संसार के समस्त बन्धनों से मुक्ति दिलाती है। जन्म–जन्मान्तर के बन्धन इससे छूट जाते हैं, अतएव इसे 'विमुक्ति' कहना समीचीन है।
13. खंती – क्षान्तिः–क्षमा : क्रोध निग्रह को क्षान्ति कहते हैं, यह क्षमा से उत्पन्न होता है। क्षान्ति का अर्थ सहिष्णुता भी है। इन सभी भावों की विद्यमानता में अहिंसा का भाव आता है। अतः अहिंसा को 'क्षान्ति' कहना सार्थक है।
14. सम्मत्ताराहणा – सम्यक्त्वाराधना : सम्यक्त्व के पाँच लक्षण हैं–प्रशम, संवेग, निर्वेद, अनुकम्पा और आस्था। इसकी आराधना अहिंसा पर आधारित होती है, अतः यह नाम युक्तियुक्त है।
15. महंती – महती–महान : समस्त व्रतों, धार्मिक अनुष्ठानों में अहिंसा सर्वश्रेष्ठ है, क्योंकि इसमें सभी व्रतों का समावेश हो जाता है। इसलिए अहिंसा को 'महती' कहा गया है।
16. बोही – बोधि–धर्म की प्राप्ति : सर्वज्ञ कथित धर्म की प्राप्ति बोधि है। रत्नत्रय को भी बोधि कहा गया है। ये सभी अपने आप में अहिंसारूप हैं या अहिंसा से बोधि की प्राप्ति होती है, इस दृष्टि से 'बोधि' नाम की सार्थकता है।
17. बुद्धी – बुद्धि : बुद्धि की सफलता का कारण अहिंसा होने से अहिंसा को बुद्धि कहा गया है अथवा दृढ़ता से अहिंसा का पालन करने पर श्रुत ज्ञान, अवधि ज्ञान, मनःपर्यव ज्ञान, केवल ज्ञान आदि की प्राप्ति होती है। ज्ञान बुद्धि का कार्य है, इसलिए भी अहिंसा को 'बुद्धि' कहना उपयुक्त है।
18. घिई – धृति : चित्त की दृढ़ता धृति है। अहिंसा पालन में धृति की अनिवार्यता है। कारण में कार्य का उपचार होने से 'धृति' अहिंसा का पर्याय है।
19. समिद्धी – समृद्धि : मानसिक एवं आत्मिक आनंद को समृद्धि कहते हैं , अहिंसा से इन दोनों प्रकार के आनन्द की लब्धि होती है, इसलिए समृद्धि–आनंद का कारण होने से अहिंसा का नाम 'समृद्धि' है।
20. रिद्धी–ऋद्धि–लक्ष्मी : अहिंसा से आत्मिक एवं भौतिक ऋद्धि की प्राप्ति होती है इसलिए अहिंसा 'ऋद्धि' रूप है।
21. विद्धी – वृद्धि : आत्मिक गुणों या पुण्य प्रकृति का बढ़ना वृद्धि है। अहिंसा पालन से तप–संयम रूप आत्मिक गुण एवं पुण्य बढ़ता है, इसलिए यह 'वृद्धि' है।
22. ठिई – ठिती–स्थिति : अहिंसा आत्मा को शाश्वत स्थिति यानि मोक्ष प्राप्त कराती है, अतएव 'स्थिति' है।
23. पुट्ठी – पुष्टि : पुण्य वृद्धि से आत्मा को पुष्ट करना पुष्टि है। अहिंसा से आत्मा पुष्ट होती है, अतः यह 'पुष्टि' है।
24. णंदा – नन्दा : स्व–पर सभी जीव अहिंसा से आनंदित होते हैं, इसलिए यह 'नन्दा' है।
25. भद्दा – भद्रा : स्व–पर कल्याण रूप होने से यह 'भद्रा' है।
26. विसुद्धी – विशुद्धि : अहिंसा जीव को विशुद्ध बनाती है, अतएव यह 'विशुद्धि' है।
27. लद्धी – लब्धि : अहिंसा के प्रभाव से केवलज्ञानादि लब्धियाँ प्राप्त होती हैं, इसलिए इसका 'लब्धिनाम' सार्थक है।
28. विसिट्ठदिट्ठी – विशिष्टदृष्टि : विशुद्ध दृष्टि रूप होने से यह 'विशिष्टदृष्टि' है।
29. कल्लाणं – कल्याण–आरोग्यता : मोक्षदायिनी होने अथवा शारीरिक, मानसिक स्वास्थ्य का कारण होने से यह 'कल्याण' कही जाती है।
30. मंगलं – पापों का उपशमन अहिंसा करती है, इसलिए यह 'मंगल' है।
31. पमोअ – प्रमोद–हर्ष : हर्षोत्पादक होने से अहिंसा 'प्रमोद' है।
32. विभूई – विभूति–ऐश्वर्य : बाह्याभ्यन्तर समग्र ऐश्वर्य का कारण होने से अहिंसा 'विभूति' है।
33. रक्खा – रक्षा–प्राणियों की रक्षा करने वाली या आत्मा का रक्षक होने से अथवा जीवों के रक्षक इसके आराधक होने से अहिंसा को 'रक्षा' कहा गया है।
34. सिद्धावासो – सिद्धावास : इसके आसेवन से जीव सिद्धावास–सिद्धगति को प्राप्त करता है, इसलिए अहिंसा 'सिद्धावास' है।
35. अणासवो – अनाश्रव : अहिंसा से कर्म का आस्रव रुकता है, इसलिए 'अनाश्रव' कहना युक्तियुक्त है।
36. केवलीठाणं – केवलिस्थान : केवलीज्ञानी सदा अहिंसा के आश्रय में रहते हैं, इस दृष्टि से 'केवलि स्थान' नामकरण की सार्थकता है।
37. सिवं – शिव : अहिंसा निराबाध सुख का कारण है अथवा अहिंसा पालन से उपद्रवों का शमन होता है, इस दृष्टि से 'शिव' नाम की सार्थकता है।
38. समिई – समिति–अहिंसा सम्यक् प्रवृत्ति रूप है, इसलिए यह 'समिति' है।
39. सीलं – शील–समाधि : अहिंसा समाधि का कारण बनती है, इसलिए यह 'समाधि' है। शील का अर्थ पवित्र आचार या समाधान–निराकुलता भी होता है।
40. संजमो – संयम हिंसानिवृत्ति : अहिंसा पालन से हिंसा का निवारण होता है अतः यह 'संयम' है। कहीं–कहीं शील–संयम की गिनती अहिंसा के एक ही नाम में है।
41. शीलघरो – शीलगृह : सदाचार या ब्रह्मचर्य आदि शील का यह स्थान है, इसलिए 'शीलगृह' कहना समीचीन है।
42. संवरो – आस्रव निरोध रूप होने से अहिंसा 'संवर' है।
43. गुत्ती – गुप्ति : मन, वचन व काया की असत् प्रवृत्तियों के रोकने को गुप्ति कहते हैं, अहिंसा की आराधना से असत् प्रवृत्तियाँ रुक जाती हैं अर्थात् गुप्ति की साधना होती है, अतः यह 'गुप्ति' नाम से जानी जाती है।

44. ववसाओ – व्यवसाय : दृढ़ निश्चय या शुभ निश्चय को व्यवसाय कहते हैं। अहिंसा का पालन दृढ़निश्चय से होता है, अतः 'व्यवसाय' नाम सार्थक है।
45. उस्सओ – उच्छय : भावना की उत्कृष्टता उच्छय है। अहिंसा से शुभभावों की उन्नति होती है, अतः 'उच्छय' नाम संगत है।
46. जण्णो – यज्ञ : दान आदि परोपकार को यज्ञ कहा गया है, अहिंसा से प्राणियों को अभयदान मिलता है, अतः 'यज्ञ' नाम सम्यक् है। अहिंसा भावपूजा रूप है, इसलिए यह 'यज्ञ' कहलाती है।
47. आययणं – आयतन–आश्रय : अहिंसा गुणों का आयतन है, अतः इसे 'आयतन' कहा गया है।
48. जयणं – यतन : प्राणियों की रक्षा का प्रयत्न से अहिंसा 'यतन' रूप है।
49. अप्पमाओ – अप्रमाद : मद्य, विषय, कषाय, निन्द (निद्रा) और विकथा ये पाँच प्रमाद हैं। अहिंसा की उत्पत्ति उक्त प्रमादों को त्यागने से होती है, अतः 'अप्रमाद' रूप है।
50. अस्साओ – आश्वास–आश्वासन : अहिंसा से दुःखित प्राणियों का आश्वासन मिलता है, इसलिए 'आश्वास' नाम भी संगत है।
51. वीसासो – विश्वास : यह स्व–पर को विश्वास दिलाने वाली है या अहिंसक पर सभी जीव विश्वास करते हैं, इसलिए अहिंसा 'विश्वास' रूप है।
52. अभओ – अभय : अहिंसा प्राणिमात्र को निर्भयता प्रदान करती है, एतदर्थं 'अभय' नामकरण की संगति है।
53. अमाघाओ – अमाघात : अहिंसा से किसी भी प्राणी का घात नहीं होता, इसलिए यह 'अमाधात वा अमारि' कहलाती है।
54. चोक्ख – चोक्ष–सर्वोत्तम : अत्यन्त पावन–पवित्र वस्तुओं में भी यह पवित्र है, इसलिए इसका नामकरण 'चोक्ष' अथवा 'चोक्षा' है।
55. पवित्ता – पवित्रा : यह पवित्र भावना का संचार करती है।
56. सुई – शुचि : भावशुद्धि रूप होने से यह 'शुचि' कही जाती है।
57. पूया – पूजा–पूता : अहिंसा भाव–पूजा है अथवा पवित्रता का कारण है, इसलिए 'पूजा या पूता' कहलाती है।
58. विमल – अविरति आदि मलों से रहित होने अथवा निर्मलता का कारण होने से इसके 'विमल' नाम की सार्थकता है।
59. पभासा – प्रभासा–प्रकाश : आत्मा को प्रकाशमय बनाने वाली होने से अहिंसा की 'प्रभास' नाम युक्तियुक्त है।
60 निम्मलयर – निर्मलतर : अहिंसा प्रादुर्भूत होने पर सभी कर्मरज दूर हो जाते हैं। उस समय जीव निर्मलता को प्राप्त कर लेता है। इसलिए अहिंसा को 'निर्मलतर' कहना भी सम्यक् है।

अहिंसा के उपमान

'प्रश्नव्याकरणसूत्र' में अहिंसा की महिमा, उपयोगिता एवं प्रशंसा बताने के क्रम में आठ उपमानों का प्रयोग किया गया है[27] :–

1. 'भीयाण विव सरणं' – भयभीत प्राणियों के लिए यह शरणभूत है।
2. 'पक्खीणं विव गमणं' – पक्षियों के गमन करने–उड़ने के लिए आकाश के समान है।
3. 'तिसियाणं विव सलिलं' – प्यास से पीड़ित प्राणियों के लिए अहिंसा जल के समान है।
4. भूखों के लिए यह भोजन है।
5. समुद्र के मध्य डूबते जीवों के लिए अहिंसा जहाज है।
6. चतुष्पद प्राणियों के लिए 'आश्रमस्थल' है। रोगों से दुखित जनों के लिए अहिंसा 'औषधरूप' है।
7. भयानक जंगल में सुरक्षा साधनों से युक्त 'सार्थवाहों के संघ' के समान है।
8. शास्त्रकार का कहना है कि स्थावर प्राणी हो या त्रस सभी के लिए अहिंसा 'क्षेम–कुशल' करने वाली है।[28]

अहिंसा महाव्रत की भावनाएँ

महाव्रतों की सुरक्षा के लिए प्रत्येक व्रत की पाँच–पाँच भावनाएँ बताई गई हैं। जाने हुए अर्थ का पुनः पुनः चिन्तन करना भावना है। इनका अभ्यास आत्मा के द्वारा होता है। इससे महाव्रत की शुद्धि मन, वचन और काया से होती है। खेत की बाड़ की तरह ही ये व्रतों की रक्षा करती हैं। अहिंसा महाव्रत की भावनाएँ निम्नलिखित है :–

इर्या समिति भावना

ठहरने और गमन करने से स्व और पर को पीड़ा न हो, इस प्रकार के गुण से युक्त, गाड़ी के जुए प्रमाण भूमि तक देखकर चलना 'इर्या समिति भावना' है।[29]

मनः समिति भावना

पापयुक्त मन से पापकारी, अधर्ममय, दारुण, नृशंसवध, बन्धन एवं क्लेश की बहुलता वाला, मरण एवं क्लेश से युक्त चिन्तन नहीं करना 'मनः समिति भावना' कहा गया है।[30]

वचन समिति भावना

पापयुक्त वचनों का कभी भी प्रयोग नहीं करना 'वचन समिति भावना' है।[31]

एषणा समिति भावना

शुद्ध और अनेक घरों से थोड़े–थोड़े आहार की गवेषणा करना 'एषणा समिति भावना' है।[32]

आदान–निक्षेप समिति भावना

संयम के उपकरणों को अप्रमत्त होकर रखना और ग्रहण करना 'आदान–निक्षेप समिति भावना' है।[33]

आचारांग (2/3/15) और समवायांगसूत्र (25) में इस व्रत की भावनाओं में एषणा समिति के स्थान पर 'आदान–निक्षेप समिति' का उल्लेख है और आदान–निक्षेप समिति के जगह 'आचारांग' में 'आलोकित–पान–भोजन' का उल्लेख है, जबकि प्रश्नव्याकरण में अहिंसा व्रत की भावनाओं में आलोकित पान–भोजन का कहीं उल्लेख नहीं किया गया है।

अध्ययन का उददेश्य

अहिंसा का दार्शनिक विवेचन व सममायिक जीवन में इसकी प्रासंगिकता।

निष्कर्ष

जैन संस्कृति एवं साहित्य में अहिंसा की धारणा आज के जीवन में न सिर्फ प्रासंगिक है बल्कि उसका आचार व व्यवहार भी प्रासंगिक है।

सन्दर्भ ग्रंथ सूची

1. *"अहिंसासकलोधर्म। हिंसा धर्मस्तथाहितः"–महभारत, अनुशासन पर्व*
2. *वही, अनुशासन पर्व, 116/30, 145*
3. *द्यौः शान्तिरन्तरिक्ष.....शांतिराप.....वनस्पतयःशान्ति ब्रह्मशान्तिः सर्वशान्तिः शान्तिरेधि–यजुर्वेद, 36.17*
4. *क. ईशावास्योपनिषद, 6–7 ख. छान्दोग्य, 8.15.1; 3. 17.4*
5. *मनुस्मृति, 6.74, 7.63*
6. *श्रीमद्भागवतपुराण, प्रथमखंड, 4.22*
7. *"अहिंसासत्यास्तेयब्रह्मचर्यापरिग्रहा यमाः"– योगसूत्र, 2. 30*
8. *दीघनिकाय–हिन्दी अनुवाद (राहुलसांकृत्यायन), पृष्ठ 2–3*
9. *आचारांग, 1.2.2*
10. *प्रश्नव्याकरणसूत्र 22 पृष्ठ 532 (आगरा संस्करण)*
11. *बृहद्स्वयम्भूस्तोत्र, गाथा 119*
12. *पढमं होइ अहिंसा, बिइयं सच्चवयणं ति पण्णत्तं। दत्तममणुण्णायं संवरो य, बंभचेरमपरिग्गहत्तं च।। प्र. व्या. 104 (ब्यावर संस्करण)*
13. *अहिंसाग्गहणो पंचमहव्वयाणि गहियाणि भवइ–दशवै. चूर्णि, सम्पादकीय।*
14. *हरिभद्र, अष्टकप्रकरण, 16.5 15. वही, 16.5*
16. *योगशास्त्र प्रकाश, 2*
17. *युधिष्ठर मीमांसक, संस्कृत हिन्दी धातु कोश, पृष्ठ 142*
18. *प्राकृत एवं जैनागम साहित्य (डॉ. हरिशंकर पाण्डेय), पृष्ठ 203*
19. *संस्कृत हिन्दी कोश, आप्टे, पृष्ठ 134*
20. *आचारांग, 2.15*
21. *क. आचारांग, 2.15 ख. उत्तराध्ययन, 8.10*
22. *आवश्यक सूत्र, अमोलक ऋषि, 113 23. नियमसार, 54*
24. *कायेंदियगुणमग्गणकुलाउजोणीसु सव्वजीवाणं। णाऊण य ठाणादिसु हिंसादिविवज्जणमहिंसा।। मूलाचार, 1.5*
25. *प्र. व्या. सूत्र, 107 (ब्या.सं.)*
26. *(क.) प्र. व्या. सूत्र, 21 पृष्ठ 521–531(आ.सं.) (ख) प्र. व्या. अभयदेवटीका (ग) प्र.व्या.सूत्र, व्याख्या पृष्ठ 162–164 (ब्या.सं.)*
27. *(घ) जैन धर्म में अहिंसा, पृष्ठ 174–181 (डॉ. वशिष्ठ नारायण सिन्हा)*
27. *प्र. व्या. सूत्र, 22 पृष्ठ 532 (आ.सं.)*
28. *''तसथावर सव्वभूय खेमकरी'' – वही, 22*
29 *ठाण गमण गुणजोगजुंजणजुगंतरणिवाइयाए दीट्ठिए ईरियव्वं। प्र. व्या. सूत्र 113 (ब्यावर संस्करण)*
30. *ण कयावि मणेण पावएणं पावगं किंचि वि झायव्वं। वही 114*
31. *वईए पावियाए पावगं ण किंचि वि भासियव्वं। वही, 115*
32. *आहार–एसणाए सुद्धं उंछं गवेसियव्वं– वही, 116*
33. *अप्पमत्तेण होइ सययं णिक्खियव्वं च गिण्हयव्वं। वही, 117*